इकाई 16 आधुनिक उर्दू कविता में राष्ट्रीय विचार

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 स्वतन्त्रता आन्दोलन में उर्दू की भूमिका

16.3 मुहम्मद इक़बाल

16.4 हसरत मोहानी

16.5 मीर तक़ी मीर

16.6 प्रेमचंद

16.7 मुहम्मद अली जौहर

16.8 फ़िराक़ गोरखपुरी

16.9 सागर निज़ामी

16.10 अली सरदार जाफ़री

16.11 सारांश

16.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

16.13 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- आधुनिक उर्दू कविता के उद्भव और विकास को जानेंगे
- उर्दू कविता के स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में सहयोग को जानेंगे
- उर्दू कविताओं में परिलक्षित राष्ट्रवाद को देखेंगे
- उर्दू के प्रमुख राष्ट्रकवियों और उनकी रचनाओं के विषय में जानेंगे

16.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों ! सबसे पहले हम उर्दू भाषा की उत्पत्ति और विकास को जानने का प्रयास करते हैं। उर्दू भाषा का विकास भारतीय उपमहाद्वीप पर अरब प्रभाव के दौरान प्रारंभ हुआ और इसे विशेष रूप से मुगल साम्राज्य (1526-1857) के काल में बढ़ावा मिला। हालांकि, इसका प्रारंभिक विकास दिल्ली सल्तनत (1206-1526) के समय से माना जाता है। उर्दू शायरी का स्वर्णिम युग 18वीं और 19वीं शताब्दी में देखा गया। दिल्ली सल्तनत ने अपने साम्राज्य का विस्तार दक्षिण-पूर्वी भारत के दक्कन के पठार तक किया, जिससे क्षेत्र की भाषाओं जैसे हरियाणवी और पंजाबी का भी उर्दू पर प्रभाव पड़ा। प्रारंभ में उर्दू भाषा का धार्मिक गद्य विभिन्न

देशों में लोकप्रिय था। 19वीं शताब्दी में उर्दू में आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष साहित्य का विकास हुआ और यह फला-फूला।[1]

उर्दू भाषा की उत्पत्ति ने प्रारंभ में हिंदी भाषा के साथ अपना मूल साझा किया, इसलिए हिंदी को उर्दू की बहन भाषा कहा जाता है। दोनों भाषाएँ मुख्य रूप से एक ही व्याकरणिक आधार पर आधारित हैं। हालाँकि, हिंदी प्राचीन काल में संस्कृत भाषा के पुराने रूप, जैसे "देवनागरी" लिपि में लिखी जाती थी।

इतिहास में उर्दू का महत्त्व इस बात में निहित है कि यह संस्कृत की व्युत्पन्न लिपि का उपयोग करती थी। लेकिन बाद में इसमें फ़ारसी, तुर्की और अरबी भाषाओं का प्रभाव पड़ा और उन्होंने उर्दू की शब्दावली को समृद्ध किया। उर्दू भाषा की उत्पत्ति 14वीं और 15वीं शताब्दी में हुई। उस समय उर्दू में कविता और साहित्य का लेखन शुरू हुआ, जो मुख्य रूप से मुस्लिम प्रभुत्व वाली भाषा थी।

वर्तमान में, भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिम सांस्कृतिक लोग उर्दू भाषा के माध्यम से जुड़े हुए हैं। अधिकांश उर्दू साहित्य और उपन्यास, उर्दू सांस्कृतिक लेखकों की कविताएँ, इसी भाषा में लिखी जाती हैं।

आधुनिक उर्दू कविता में राष्ट्रीय विचारों का उदय 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ, जब भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ राष्ट्रवादी भावनाएँ पनप रही थीं। इस दौर के कवियों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों को उठाया, और भारत की स्वतंत्रता और एकता के लिए संघर्ष में योगदान दिया।

बोध प्रश्न - 1

1. आधुनिक उर्दू कविता में राष्ट्रीय विचारों का उदय कब हुआ ?

अभ्यास प्रश्न - 1

1. उर्दू भाषा की उत्पत्ति एवं विकास को बतलाइये ।

……..

……..

……..

……..

……..

16.2 स्वतन्त्रता आन्दोलन में उर्दू की भूमिका

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उर्दू भाषा ने भारतीयों के मनोबल और देशभक्ति की भावना को प्रज्वलित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'इंक़लाब ज़िन्दाबाद' जैसा नारा, जो उर्दू से निकला, स्वतंत्रता संग्राम में जोश भरने वाला मंत्र बन गया। यह नारा केवल शब्द नहीं था, बल्कि एक जुनून था, जो लोगों के दिलों में जोश और उमंग भर देता था। इसी तरह, 'सारे जहां

[1] https://unacademy.com/content/upsc/study-material/medieval-india/rise-of-the-urdu-language/

से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा' और 'सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' जैसे प्रसिद्ध शेर स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय भावना को प्रबल करते रहे।

जब इन नारों और शेरों को भीड़ में जोर से बोला जाता था, तो इसका प्रभाव और भी अधिक हो जाता था। यह नारे और शायरी लोगों में एकता और जोश भरने के साथ-साथ अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ एक शक्तिशाली विरोध का प्रतीक भी थे। भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों के मुख से 'सरफ़रोशी की तमन्ना' जैसा शेर सुनना, अंग्रेजों के लिए यह संकेत था कि भारतीयों में स्वतंत्रता की आग बुझाने के लिए कोई भी साधन पर्याप्त नहीं होगा।

उर्दू भाषा, अपनी मिठास और दिलकश अंदाज के कारण, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीयों को एकजुट करने का माध्यम बनी। उर्दू लेखकों, शायरों और पत्रकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज को जागरुक किया और स्वतंत्रता की भावना को मजबूत किया। इकबाल, हसरत मोहानी और अशफ़ाक़ुल्लाह ख़ाँ जैसे शायरों की रचनाओं ने भारतीयों के दिलों में स्वतंत्रता की लौ जलाई।

उर्दू शायरी ने स्वतंत्रता संग्राम में न केवल अंग्रेजों के खिलाफ माहौल बनाया बल्कि लोगों को अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की असली महत्ता समझाई। मीर तक़ी मीर और ग़ालिब जैसे शायरों ने गुलाम भारत की दु:खद स्थिति को अपनी शायरी में उकेरा और लोगों को स्वतंत्रता की आवश्यकता का एहसास दिलाया। मीर ने दिल्ली की बदहाली का वर्णन करते हुए लिखा:

दिल्ली जो एक शहर था आलम में इंतिखाब।
रहते थे मुंतखिब ही जहां रोजगार के।।

जिसको फ़लक ने लूट के वीरान कर दिया।
हम रहने वाले हैं उसी उजड़े दयार के।।

प्रेमचंद जैसे लेखकों ने भी उर्दू में लिखकर अंग्रेजों की नीतियों और अत्याचारों का पर्दाफाश किया। प्रेमचंद का 'सोज़-ए-वतन' कहानी संग्रह अंग्रेजों द्वारा जब्त कर लिया गया था, क्योंकि उसमें देशभक्ति और अंग्रेज विरोधी भावनाएँ प्रकट की गई थीं।

मौलाना मोहम्मद अली जौहर, मौलाना आजाद और मौलाना हसरत मोहानी जैसे नेताओं ने अपने भाषणों और लेखों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूती प्रदान की। गांधीजी ने भी स्वतंत्रता आंदोलन के समय जिस 'भारतीय' भाषा की वकालत की, वह उर्दू के काफी करीब थी।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ उर्दू भाषा ने भी स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रज भाषा, अवधी, भोजपुरी जैसी भाषाओं की तुलना में उर्दू उस खड़ी बोली हिंदी के ज्यादा करीब थी, जिसने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आज, बोलचाल में हिंदी और उर्दू अलग नहीं लगतीं। जब इसे फारसी लिपि में लिखा गया तो उर्दू कहलाया और देवनागरी में लिखा गया तो हिंदी कहा गया। स्वतंत्रता आंदोलन के समय, उर्दू ने हमारे देशवासियों को एकजुट करने और उन्हें आजादी की लड़ाई के लिए प्रेरित करने में अमूल्य योगदान दिया।[2]

[2] https://www.navjivanindia.com/vichar/urdus-role-in-freedom-movement

बोध प्रश्न - 2

1. किस उर्दू कवि ने अपनी रचना में दिल्ली की बदहाली का वर्णन किया ?

   ……..

   ……..

   ……..

2. 'सोज़-ए-वतन' कहानी संग्रह किसकी रचना है ?

   ……..

   ……..

   ……..

प्रमुख उर्दू राष्ट्रीय कवि और उनकी रचनाएं:

16.3 मुहम्मद इक़बाल (जीवन: 9 नवम्बर 1877 – 21 अप्रैल 1938)

मुहम्मद इक़बाल मसऊदी उर्फ़ मुहम्मद इक़बाल अविभाजित भारत के प्रसिद्ध कवि, नेता और दार्शनिक थे। उर्दू और फ़ारसी में इनकी शायरी को आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठ शायरी में गिना जाता है। इनकी प्रमुख रचनाएं हैं: असरार-ए-ख़ुदी, रुमुज़-ए-बेख़ुदी और बंग-ए-दारा, जिसमें देशभक्तिपूर्ण तराना-ए-हिन्द (सारे जहाँ से अच्छा) शामिल है। फ़ारसी में लिखी इनकी शायरी ईरान और अफ़ग़ानिस्तान में बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ इन्हें इक़बाल-ए-लाहौर कहा जाता है। इन्होंने इस्लाम के धार्मिक और राजनैतिक दर्शन पर काफ़ी लिखा है।

इक़बाल मसऊदी ने हिंदुस्तान की आजादी से पहले "तराना-ए-हिन्द" लिखा था, जिसका आरंभिक पंक्ति "सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा" है। इस सामूहिक देशभक्ति गीत के माध्यम से उन्होंने अविभाजित हिंदुस्तान के लोगों को एकजुट रहने का संदेश दिया। इस गीत में सभी धर्मों के लोगों को 'हिंदी हैं हम, वतन है' कहकर देशभक्ति और राष्ट्रवाद की भावना को प्रेरित किया। इस प्रकार, इक़बाल ने इस गीत के जरिये राष्ट्रीय एकता और सभी भारतीयों के बीच भाईचारे का प्रचार किया।[3]

बोध प्रश्न - 3

1. 'सारे जहाँ से अच्छा' किसके द्वारा रचित है ?

   ……..

   ……..

2. ईरान और अफ़ग़ानिस्तान में इक़बाल किस नाम से प्रसिद्ध हैं ?

   ……..

   ……..

[3] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%B9%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%A6_%E0%A4%87%E0%A4%95%E0%A4%BC%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B2

16.4 हसरत मोहानी (1 जनवरी 1875 - 13 मई 1951)

सैयद फ़ज़ल-उल-हसन उर्फ़ हसरत मोहानी एक भारतीय स्वातंत्र्य कार्यकर्ता, भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और उर्दू भाषा के एक प्रसिद्ध कवि थे। उन्होंने 1921 में इंकलाब ज़िन्दाबाद (हिन्दी अर्थ : "क्रांति अमर रहे!") का प्रसिद्ध नारा गढ़ा। कांग्रेस के अहमदाबाद सत्र में भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने वाले वे पहले व्यक्ति थे। मग़फ़ूर अहमद अज़ाज़ी ने हसरत मोहानी द्वारा मांगे गए पूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन किया।

हसरत मोहानी ने 1903 में, अलीगढ़ से एक पत्रिका 'उर्दू-ए-मुअल्ला' का प्रकाशन शुरू किया, जो अंग्रेजी सरकार की नीतियों की आलोचक थी। 1904 में, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय हो गए। 1905 में, उन्होंने बाल गंगाधर तिलक द्वारा चलाए गए स्वदेशी आंदोलन में हिस्सा लिया। 1907 में, उन्होंने अपनी पत्रिका में "मिस्र में ब्रिटिशों की नीति" नामक लेख प्रकाशित किया, जो ब्रिटिश सरकार को बहुत खली और इसके कारण उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

1919 के खिलाफत आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। 1921 में, उन्होंने पहली बार "इंक़लाब ज़िन्दाबाद" का नारा अपने लेखन में इस्तेमाल किया। यह नारा बाद में भगत सिंह, अशफाक़ुल्लाह ख़ान और राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी द्वारा प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने 1921 में कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में भी हिस्सा लिया।

हसरत मोहानी हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने श्रीकृष्ण की भक्ति में भी शायरी की। वे बाल गंगाधर तिलक और भीमराव अंबेडकर के निकट सहयोगी थे। 1946 में, जब भारतीय संविधान सभा का गठन हुआ, तो वे उत्तर प्रदेश से संविधान सभा के सदस्य चुने गए।

1947 में भारत विभाजन का उन्होंने विरोध किया और भारत में रहना पसंद किया। 13 मई 1951 को उनका अचानक निधन हो गया।

अपने लेखन में उन्होंने देशभक्ति, सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय एकता, धार्मिक और राजनीतिक विचारों पर प्रकाश डाला। 2014 में, भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया।[4]

बोध प्रश्न - 4

1. 'इंकलाब ज़िन्दाबाद' यह नारा किसने लिखा ?

   ……..

   ……..

2. हसरत मोहानी ने 1903 में, अलीगढ़ से किस पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया ?

   ……..

   ……..

[4] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B9%E0%A4%B8%E0%A4%B0%E0%A4%A4_%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%80

16.5 मीर तक़ी मीर (1723 - 20 सितम्बर 1810)

ख़ुदा-ए-सुखन मोहम्मद तकी, जिन्हें मीर तकी "मीर" के नाम से जाना जाता है, उर्दू और फ़ारसी भाषा के महान शायर थे। मीर को उर्दू के उस प्रचलन के लिए याद किया जाता है जिसमें फ़ारसी और हिन्दुस्तानी शब्दों का बेहतरीन मिश्रण और सामंजस्य होता है। उन्होंने अहमद शाह अब्दाली और नादिरशाह के हमलों से बुरी तरह प्रभावित दिल्ली को अपनी आँखों से देखा था। इस त्रासदी की पीड़ा उनकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई देती है। अपनी ग़ज़लों के बारे में उन्होंने कहा था:

हमको शायर न कहो मीर कि साहिब हमने
दर्दो ग़म कितने किए जमा तो दीवान किया।

अर्थात्, मीर खुद को शायर नहीं मानते, बल्कि उनका कहना है कि उन्होंने अपने जीवन के दर्द और ग़म को इकट्ठा कर उसे एक संग्रह (दीवान) में परिवर्तित कर दिया।[5]

बोध प्रश्न - 5

1. मीर ने किनके हमलों से प्रभावित दिल्ली को अपनी आँखों से देखा था ?

   ……..

   ……..

   ……..

2. मीर को किन दो भाषाओं के शब्दों के बेहतरीन मिश्रण के लिए याद किया जाता है ?

   ……..

   ……..

   ……..

16.6 प्रेमचंद (31 जुलाई 1880 – 8 अक्टूबर 1936)

धनपत राय श्रीवास्तव, जिन्हें प्रेमचंद के नाम से जाना जाता है, हिंदी और उर्दू के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकारों, कहानीकारों और विचारकों में से एक थे। उन्होंने सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान जैसे लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास और कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा जैसी तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं। उनकी अधिकांश रचनाएँ हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुईं। उन्होंने अपने समय की सभी प्रमुख उर्दू और हिंदी पत्रिकाओं जैसे जमाना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि में लेखन किया।

1906 से 1936 के बीच प्रेमचंद द्वारा लिखा गया साहित्य इन तीस वर्षों के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का जीवंत दस्तावेज है। इसमें उस समय के समाज सुधार आंदोलनों,

[5] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0_%E0%A4%A4%E0%A4%95%E0%A4%BC%E0%A5%80_%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0

स्वतंत्रता संग्राम और प्रगतिवादी आंदोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण मिलता है। उनकी रचनाओं में दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छुआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है। हिंदी कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के समय को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है।

1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने सरकारी नौकरी छोड़ने की अपील की, और उन्होंने 23 जून को अपने स्कूल इंस्पेक्टर के पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद, वे लेखन को अपना पेशा बना लिया। उनकी बहुत सारी कहानियों में निम्न और मध्यम वर्ग का चित्रण है। डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद की हिंदी-उर्दू कहानियों का संपूर्ण संग्रह "प्रेमचंद कहानी रचनावली" के रूप में प्रकाशित कराया है। उनके अनुसार, प्रेमचंद ने अपने जीवन में लगभग 300 से अधिक कहानियाँ और 18 से अधिक उपन्यास लिखे हैं। इनकी इस क्षमता के कारण उन्हें "कलम का जादूगर" कहा जाता है। प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह "सोज़े वतन" (राष्ट्र का विलाप) नाम से जून 1908 में प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह के कारण प्रेमचन्द को ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पडा। इस संग्रह में पाँच कहानियाँ थीं। दुनिया का सबसे अनमोल रतन, शेख मखमूर, यही मेरा वतन है, शोक का पुरस्कार और सांसारिक प्रेम। पाँचों कहानियाँ उर्दू भाषा में थीं। यह उर्दू में प्रकाशित पहला कहानी संग्रह, अंग्रेज सरकार ने जप्त कर लिया था। हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने इसे देशद्रोही करार दिया और इसकी सारी प्रतियाँ जलवाकर नष्ट कर दीं। डॉ॰ गोयनका के अनुसार, कानपुर से निकलने वाली उर्दू मासिक पत्रिका "ज़माना" के अप्रैल अंक में प्रकाशित "सांसारिक प्रेम" और "देश-प्रेम" (इश्क़े दुनिया और हुब्बे वतन) वास्तव में उनकी पहली प्रकाशित कहानी है।[6]

तो इस प्रकार हम देख सकते हैं कि प्रेमचंद के साहित्य में राष्ट्रीय विचारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, समाजसेवा, सामाजिक न्याय, और लोकतंत्र के महत्त्व को प्रमुख रूप से प्रकट किया गया है। उनकी रचनाओं में भारतीय समाज की समस्याओं, उसके अन्धविश्वासों, विविधताओं, और संघर्षों का सटीक चित्रण किया गया है।

बोध प्रश्न - 6

1. हिंदी कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में कब से कब तक के समय को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है ?
2. डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद की हिंदी-उर्दू कहानियों के संपूर्ण संग्रह को किस रूप में प्रकाशित कराया है ?
3. प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह "सोज़े वतन" कब प्रकाशित हुआ था ?

अभ्यास प्रश्न - 2

1. प्रेमचन्द की रचनाओं में सामाजिक और राष्ट्रीय विचारों को अपने शब्दों में लिखें।

   ……..

[6] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6

.....

.....

.....

.....

.....

16.7 मुहम्मद अली जौहर (10 दिसंबर 1878 - 4 जनवरी 1931)

मौलाना मोहम्मद अली जौहर को उनके साहसिक और प्रबुद्ध दृष्टिकोण के लिए भी जाना जाता है, जो उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रदर्शित किया। उन्होंने विदेशों में भारतीय मुस्लिमों की आवाज को उठाया और उनके हितों की रक्षा की। उनके लेखन, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से राष्ट्रीय और धार्मिक एकता को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी कविताओं और निबंधों में उन्होंने राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, और धर्मनिरपेक्षता के मुद्दों पर चिंतन किया। उनके समृद्ध और विशिष्ट योगदान ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को साहस और समर्थन प्रदान किया। उनके लेखन में उन्होंने भारतीय समाज की समस्याओं पर गहरा विचार किया और उन्हें सार्वजनिक मंचों पर उठाया। उनका योगदान विभाजन की भारतीय राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण था।

मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने 1911 में कलकत्ता में 'द कॉमरेड' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक का शुभारंभ किया, जिसे तेजी से प्रसारण और प्रभाव मिला। उन्होंने 1912 में दिल्ली में प्रस्थान किया और 1913 में उर्दू भाषा के दैनिक समाचार पत्र 'हमदर्द' का उद्घाटन किया। 1902 में उन्होंने अमजदी बानो बेगम (1886-1947) से विवाह किया, जो सक्रिय रूप से राष्ट्रीय और खिलाफत आंदोलन में भाग लेती थीं।[7]

तो इस प्रकार हमने देखा कि उर्दू कविता और रचनाओं में राष्ट्रीय विचारों को विभिन्न रूपों में व्यक्त किया गया है।

- **देशभक्ति और स्वतंत्रता:** उर्दू कवियों ने भारत की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध इतिहास और गौरवशाली संस्कृति का चित्रण किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन की आलोचना की और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रेरणा दी।
- **सामाजिक सुधार:** उर्दू कवियों ने जातिवाद, सांप्रदायिकता और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों पर प्रहार किया। उन्होंने भारतीयों के अधिकारों और शिक्षा के महत्त्व पर बल दिया।
- **सांस्कृतिक पहचान:** कवियों ने उर्दू भाषा और संस्कृति के गौरव पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार किया और एकता का संदेश दिया।

7 https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%B9%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%A6_%E0%A4%85%E0%A4%B2%E0%A5%80_%E0%A4%9C%E0%A5%8C%E0%A4%B9%E0%A4%B0

बोध प्रश्न - 7

1. मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने 1911 में कलकत्ता में किस नाम से अंग्रेजी साप्ताहिक का शुभारंभ किया ?

   ……..

2. मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने 1913 में उर्दू भाषा के किस दैनिक समाचार पत्र उद्घाटन किया ?

   ……..

16.8 फ़िराक़ गोरखपुरी (28 अगस्त 1896 - 3 मार्च 1982)

रघुपति सहाय "फ़िराक़" जो अपने शायरी के उपनाम "फ़िराक़" गोरखपुरी से मशहूर हैं, उर्दू के विख्यात कवि हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा के बाद उन्होंने अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त की। बाद में फ़िराक़ साहब इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर बने और उर्दू में अपनी साहित्यिक रचनाएँ कीं।

उनकी रचना "अय-मदरे-हिन्दी" जिसमें भारत माता और हिन्दी भाषा के प्रति सम्मान का भाव दृष्टिगोचर होता है, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। इसके अतिरिक्त फ़िराक़ गोरखपुरी ने अपनी शायरी में कई उत्कृष्ट कृतियों का सृजन किया, जिनमें "गुल-ए-नगमा," "मश्अल," "रूह-ए-कायनात," "नग्म-ए-साज," "ग़ज़लिस्तान," "शेरिस्तान," "शबनमिस्तान," "रूप," "धरती की करवट," "गुलबाग," "रम्ज व कायनात," "चिरागां," "शोअला व साज," "हजार दास्तान," "बज्मे जिन्दगी रंगे शायरी के साथ," "हिंडोला," "जुगनू," "नकूश," "आधीरात," "परछाइयाँ," और "तरान-ए-इश्क" जैसी सुंदर नज्में और "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" जैसी रुबाइयाँ शामिल हैं। उन्होंने एक उपन्यास "साधु और कुटिया" और कई कहानियाँ भी लिखी हैं। इसके अलावा, उनकी उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी में दस गद्य कृतियाँ भी प्रकाशित हुई हैं।

फ़िराक़ ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत ग़ज़ल से की थी। अपने आरंभिक साहित्यिक काल में, 6 दिसंबर 1926 को, वे ब्रिटिश सरकार द्वारा राजनैतिक बंदी बनाए गए थे। उर्दू शायरी में, रूमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता का बोलबाला था, जिसमें लोकजीवन और प्रकृति के पहलू कम ही देखने को मिलते थे। नजीर अकबराबादी और इल्ताफ हुसैन हाली जैसे कुछ शायरों ने इस परंपरा को तोड़ा, और फ़िराक़ गोरखपुरी भी इनमें एक प्रमुख नाम हैं। उन्होंने पारंपरिक भावनाओं और शब्दावली का उपयोग करते हुए उसे नई भाषा और नए विषयों से जोड़ा। फ़िराक़ की शायरी में सामाजिक दु:ख-दर्द व्यक्तिगत अनुभूति बनकर प्रकट हुआ है। उन्होंने दैनिक जीवन के कड़वे सच और भविष्य की उम्मीदों को भारतीय संस्कृति और लोकभाषा के प्रतीकों से जोड़कर अपनी शायरी का अनूठा स्वरूप खड़ा किया। फ़ारसी, हिंदी, ब्रजभाषा और भारतीय संस्कृति की गहरी समझ के कारण उनकी शायरी में भारत की मूल पहचान झलकती है।[8]

[8] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AB%E0%A4%BC%E0%A4%BF%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A4%BC_%E0%A4%97%E0%A5%8B%E0%A4%B0%E0%A4%96%E0%A4%AA%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%80

16.9 सागर निज़ामी (1905-1983)

सागर निज़ामी, जिन्हें समद यार खान के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय कवि और उर्दू के ग़ज़ल और नज़्म के लेखक थे। वह सीमाब अकबराबादी (1882-1951) के प्रारंभिक शिष्यों में से एक थे। साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें 1969 में भारत का तीसरा सर्वोच्च सम्मान, पद्म भूषण, प्रदान किया गया था। राष्ट्रीय विचारों से समन्वित उनकी कविता "तरन-ए-वतन" अर्थात् "देश की आज़ादी" ने स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में भारतीयों में जोश भर दिया था।

1923 से 1932 तक, सागर निज़ामी ने आगरा में अपने गुरु द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका "पैमाना" का संपादन किया। 1933 में वे मेरठ चले गए और वहां "अदबी मरकज़" नामक एक प्रकाशन गृह की स्थापना की। इस प्रकाशन गृह ने अपने पहले वर्ष में "तुल्लू" (डॉन) नामक कविता संग्रह प्रकाशित किया, जिससे मेहर लाल सोनी ज़िया फतेहाबादी को उर्दू साहित्यिक जगत में पहचान मिली। कई वर्षों बाद, "नायरंग ए ख्याल" के संपादक यूसुफ हुसैन ने अहसान दानिश, सागर निज़ामी, और मेहर लाल सोनी ज़िया फतेहाबादी को आधुनिक युग के उर्दू कविता के तीन उज्ज्वल सितारों के रूप में पहचाना।

अपने जीवनकाल में सागर निज़ामी ने ग़ज़लों और नज़्मों के छह संग्रह प्रकाशित किए: "सुबुही" (1934), "बदाह ए मशरिक" (1934), "कहकशां" (1934), "रंगमहल" (1943), "मौज ए साहिल" (1949), और "नेहरूनामा" (1967)। उनकी संकलित रचनाएँ, "कुलियात ए सागर निज़ामी," 1999 और 2001 के बीच दिल्ली के मॉडर्न पब्लिशिंग हाउस द्वारा तीन खंडों में प्रकाशित की गईं।

सागर निज़ामी के कार्यों, जीवन और व्यक्तित्व का विश्लेषण "सागर निज़ामी - फ़न और शाख़्सियत मा'आ कलाम" शीर्षक से ज़मीर अली ख़ान ने 1985 में प्रकाशित किया; इस पुस्तक में उनकी चुनिंदा ग़ज़लें और नज़्में भी शामिल हैं। "दो अनारकली: सागर निज़ामी का स्वप्न नाटक और पारसी रंगमंच का विघटन" शीर्षक लेख में अफ़रोज़ ताज ने निज़ामी के नाटक "अनारकली" की तुलना इम्तियाज़ अली ताज के इसी नाम के पहले के नाटक से की है।

जैसे कुन्दन लाल सहगल ने सीमाब अकबराबादी की कविताओं को प्रसिद्ध किया था, वैसे ही मास्टर मदन (1923-1942) ने सागर निज़ामी की दो ग़ज़लें "यूं ना रह कर हमें तरसाए" और "हैरत से तक रहा है जहां ए वफ़ा मुझे" को गाकर उन्हें मशहूर बनाया। इन ग़ज़लों का संगीत पंडित अमरनाथ ने तैयार किया था।[9]

16.10 अली सरदार जाफ़री (29 नवंबर 1913 - 1 अगस्त 2000)

अली सरदार जाफ़री उर्दू भाषा के एक भारतीय साहित्यकार थे। वे कवि, आलोचक और फ़िल्मी गीतकार भी थे। उनकी कविता "यह हिन्दुस्तान" में उन्होंने भारत की संस्कृति, सभ्यता, भाषा आदि विशेषताओं को उजागर किया जो हमें राष्ट्र प्रेम हेतु सदैव प्रेरित करती रहती है।

इसके अतिरिक्त उनकी अहम कविताओं में "धरती के लाल" (1946) और "परदेसी" (1957)

[9] https://en.wikipedia.org/wiki/Saghar_Nizami

शामिल हैं। इनके कविता संग्रहों में "नई दुनिया को सलाम" (1948), "खून की लकीर" (1951), "अमन का सितारा" (1951), "एशिया जाग उठा" (1951), "पत्थर की दीवार" (1953), "पैरहन-ए-शरर" (1965), और "लहू पुकारता है" (1965) शामिल हैं। उन्होंने "अवध की खाक-ए-हसीन" (1965), "सुबहे फरदा" (कल सुबह), "मेरा सफर" (मेरी यात्रा) और "सरहद" (फ्रंटियर) जैसी कृतियों का निर्माण किया। उन्होंने विभिन्न कवियों के संकलनों का संपादन भी किया जैसे कि कबीर, मीर, ग़ालिब और मीरा बाई। उन्होंने विभिन्न नाटकों, फिल्मों, और टेलीविजन सीरियलों का भी निर्माण किया। उनकी मृत्यु 1 अगस्त 2000 को हुई। अवध की खाक-ए-हसीन कविता के कुछ अंश इस प्रकार हैं -

ऐ वतन खाके वतन वो भी तुझे दे देंगे
बच रहा है जो लहू अबके फसद्दत के बाद
गरीब सीता के घर पर कब तक रहेगी रावण की हुक्मरानी द्रौपदी
का लिबास उसके बदन से कब तक छीनेगी
शकुंतला कब तक आंधी तकदीर के भंवर में फंसी रहेगी
ये लखनौ की शिगुफ्तागी मकबरों में कब तक दबी रहेगी[10]

16.11 सारांश

आधुनिक उर्दू कविता में राष्ट्रीय विचारों का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कवियों ने अपनी रचनाओं में देशभक्ति, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक पहचान जैसे विषयों को उठाया। उनकी रचनाओं ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया और आज भी सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणी करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम है।

16.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- उर्दू साहित्य का इतिहास, राम बाबू सक्सेना, राम नारायण लाल, इलाहाबाद 1927.
- हिन्दोस्ताँ हमारा, अख़्तर जान निसार, भाग-1, पृष्ठ -49-86
- उर्दू साहित्य का इतिहास, मुहम्मद सादिक, इंटरनेट पुरालेख. दिल्ली ; ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995.
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (1857 ई. से 1947 ई. तक), डॉ. ए. के. मित्तल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020.
- संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, हरि नारायण दीक्षित, देववाणी परिषद्, नई दिल्ली, 1983.
- राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, रामधारी सिंह 'दिनकर', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1957.
- राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2019.
- राजनैतिक सिद्धान्त और शासन, डॉ. कृष्णकान्त मिश्र, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.

[10] https://en.wikipedia.org/wiki/Ali_Sardar_Jafri

- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. अनूपचन्द कपूर, प्रीमियर पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन, आगरा, 1966.

16.13 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न - 1 के उत्तर

1. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में

अभ्यास प्रश्न - 1 का उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें

बोध प्रश्न - 2 के उत्तर

1. मीर तक़ी मीर ने
2. प्रेमचन्द की

बोध प्रश्न - 3 के उत्तर

1. मुहम्मद इक़बाल
2. इक़बाल-ए-लाहौर

बोध प्रश्न - 4 के उत्तर

1. हसरत मोहानी
2. 'उर्दू-ए-मुअल्ला' पत्रिका का

बोध प्रश्न - 5 के उत्तर

1. अहमद शाह अब्दाली और नादिरशाह के हमलों से
2. फ़ारसी और हिन्दुस्तानी शब्दों के

बोध प्रश्न - 6 के उत्तर

1. 1918 से 1936 तक के
2. "प्रेमचंद कहानी रचनावली"
3. जून 1908 में

अभ्यास प्रश्न - 2 का उत्तर

2. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें

बोध प्रश्न - 7 के उत्तर

1. 'द कॉमरेड' नामक
2. 'हमदर्द' का